ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 46 | अंक 35 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 200 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 07 अगस्त, 2023 से रविवार 13 अगस्त, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2080 | सृष्टि सम्वत् 1960853124
दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh

समस्त भारतवासियों को
76वें स्वाधीनता दिवस
की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

अमेरिका में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के आयोजनों का शुभारम्भ

200वीं महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के तत्वावधान में

ह्यूस्टन में चार दिवसीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

सभा महामंत्री विनय आर्य एवं वैदिक विद्वान डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार जी हुए सम्मिलित

आगामी एक वर्ष तक अमेरिका के प्रत्येक क्षेत्र में आयोजित होंगे विभिन्न कार्यक्रम

न्यूयार्क में होगा जुलाई, 2024 में 200वीं जयन्ती का विशाल आयोजन

भारत सहित विश्व के अनेक देशों से सम्मिलित होंगे सैंकड़ो आर्यजन

अमेरिका में 200वीं जयंती और 150वें स्थापना दिवस के आयोजनों का विशेष उत्साह

–भुवनेश खोसला, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, अमेरिका

महर्षि द्वारा प्रज्वलित वेद की ज्योति से प्रकाशित है अमेरिका की धरा –विनय आर्य

युवाओं द्वारा मंच संचालन, नाटिका मंचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम रहे आकर्षण के केन्द्र

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस पर दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में जहां भारत के कोने-कोने में लगातार ऐतिहासिक सफल आयोजन हो रहे हैं, वहीं विदेशों में भी वृहद आयोजनों का क्रम लगातार गतिशील है। इस क्रम में आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के तत्वावधान में आर्य समाज ग्रेटर ह्यूस्टन, टेक्सास के प्रांगण में 27 से 30 जुलाई 2023 तक 33वां चार दिवसीय आर्य महासम्मेलन अत्यंत उमंग, उत्साह और उल्लास के वातावरण में संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पूरे अमेरिका से

- शेष पृष्ठ 4 व 5 पर

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा 27 से 30 जुलाई 2023 तक आर्य समाज, ग्रेटर ह्यूस्टन में आयोजित 33वें आर्य महासम्मेलन में ध्वजारोहण करते हुए सर्वश्री भुवनेश खोसला, विश्रुत आर्य, विनय आर्य, डॉ. राजेंद्र विद्यालंकार, श्रीमती सुषमा शर्मा एवं वहां के वरिष्ठ एवं विशिष्ट अधिकारी एवं कार्यकर्ता गण, मंच से महर्षि दयानंद सरस्वती की महिमा का बखान करते हुए प्रसिद्ध गायिका एवं प्रेरक मधुर भजनों में भावविभोर आर्यजनों का समूह।

आर्य समाज द्वारा दिल्ली में 76वें स्वाधीनता दिवस पर तिरंगा यात्रा का भव्य आयोजन

शुभारंभ : 13 अगस्त 2023 प्रातः 9:30 बजे
आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी
समापन : दोपहर 1:30 बजे आर्य समाज कीर्ति नगर
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में सम्मिलित होकर राष्ट्र की एकता-अखंडता की रक्षा हेतु बनें सहयोगी

ओ३म्
आर्य समाज की पहल
सुशील राज
आर्य प्रतिभा विकास संस्थान
द्वारा
संघ लोक सेवा आयोग की
सिविल सेवा परीक्षा IAS / IPS / IRS etc..
की उत्तम तैयारी हेतु
आर्य प्रतिभा छात्रवृत्ति परीक्षा
देश के प्रतिभावान प्रतिभागियों के साथ परीक्षा की तैयारी का अवसर
निःशुल्क दिनांक 24 अगस्त 2023 11:00 पूर्वाह्न
आज ही रजिस्टर करें
प्रमुख सुविधाएं शिक्षण मार्गदर्शन रहना खाना
इच्छुक उम्मीदवार ऑनलाइन आवेदन करने के लिए संपर्क करें।
वेबसाइट : www.pratibhavikas.org
आवेदन की अंतिम तिथि – 18 अगस्त 2023
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
9311721172 E-mail: dss.pratibha@gmail.com
अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ (रजि०)
आर्य समाज के समस्त गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए स्वर्णिम अवसर

वेदवाणी-संस्कृत

आत्मविशुद्धि द्वारा सर्वविधैश्वर्य-प्राप्ति

वेद-स्वाध्याय

इन्द्र शुद्धो हि नो रयिं शुद्धो रत्नानि दाशुषे।
शुद्धो वृत्राणि जिघन्से शुद्धो वाजं सिषाससि॥
-ऋ० 8 । 95 । 9
ऋषिः- तिरश्ची॥ देवता-इन्द्रः॥ छन्दः-अनुष्टुप्॥

शब्दार्थ- **इन्द्र**=हे आत्मन्! **शुद्धः हि**=शुद्ध हुए-हुए ही तुम **नः**=हमें **रयिम्**=ऐश्वर्य देते हो, **शुद्ध**=हुए-हुए तुम **दाशुषे**=दानशील के लिए **रत्नानि**=रत्नों को, रमणीय धनों को देते हो। **शुद्धः**=शुद्ध हुए-हुए तुम **वृत्राणि**=वृत्रों को, पापों को, बाधाओं को **जिघ्नसे**=हनन करते हो और **शुद्धः**=शुद्ध हुए-हुए तुम **वाजम्**=ज्ञान-बल को **सिषाससि**=देना चाहते हो, देते हो।

विनय- हे आत्मन्! तुम परमैश्वर्य वाले हो। हे इन्द्र! तुम हमें सब प्रकार का ऐश्वर्य दे सकते हो। हम यूँ ही बाहर भटकते हैं, बाहर की वस्तुओं का आसरा देखते हैं, जबकि सब अनिष्टों को हटा सकने वाले और सब अभीष्टों के दे सकने वाले, हे मेरे आत्मन्! तुम हमारे अन्दर विद्यमान हो, फिर भी, हममें तुम्हारी जो यह शक्ति अभी प्रकट नहीं होती है इसका कारण यह है कि हमने अपने अन्दर तुम्हें शुद्ध नहीं किया है, हमने आत्म-विशुद्धि प्राप्त नहीं की है। जिनका आत्मा शुद्ध हो जाता है, जो तपश्चर्या द्वारा व निष्काम धर्म की साधना द्वारा या पवित्र सामोपासना द्वारा अपने राग-द्वेष की मलिनताओं को, नानाविध विषय-वासनाओं की अशुद्धि को और अज्ञान-मल को हटाकर आत्मा को विशुद्ध कर लेते हैं, वे आत्माराम हो जाते हैं। वे अपनी विशुद्धात्मा को पाकर फिर अन्य किसी भी बाह्य वस्तु की अपेक्षा नहीं रखते। तब वे अपनी विशुद्ध आत्मा से जो कुछ माँगते हैं वह सब-कुछ उन्हें मिल जाता है, मिलता रहता है। निःसन्देह हे आत्मन्! तुम शुद्ध हुए हमें सर्वविध ऐश्वर्य दिया करते हो। संसार में जो दानशील, स्वार्थ-त्यागी, उदार पुरुषों को सब रमणीय धन मिल रहे हैं, जो अस्तेयव्रतियों को 'सर्वरत्नोपस्थान' हो रहा है यह सब, हे विशुद्ध आत्मन्! तुम्हारा ही दान है, तुम्हारी ही विशुद्धता का प्रताप है। विशुद्ध हुए तुम तो सब विघ्न-बाधाओं को भी मार भगाते हो, सब पापों का नाश कर देते हो, सब वृत्रों का हनन कर देते हो, सब रुकावटों को दूर कर देते हो और अन्त में, हे शुद्ध इन्द्र! तुम हमें सर्वश्रेष्ठ ऐश्वर्य को, 'वाज' को भी देते हो। इसलिए भाइयो! आओ, अब जब कभी हम अनैश्वर्य से पीड़ित हों या रमणीय धनों को प्राप्त करना चाहें तो हम अपनी आत्मा को शुद्ध करने में लग जाएँ; जब कभी वृत्र के प्रहारों से आक्रान्त हों तो इस आत्मविशुद्धि के हथियार को पकड़ लेवें और जब कभी सर्वोच्च ज्ञानबल की आवश्यकता अनुभव करें तो भी आत्मशुद्धि की ही शरण में जाएं, आत्मशुद्धि का ही आश्रय ग्रहण करें।

-:साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

उच्च स्तरीय शिक्षा की प्राप्ति महत्वपूर्ण है, किंतु संस्कारों के बिना शिक्षा अधूरी

संपादकीय

पुणे महाराष्ट्र में सेवारत डॉ. अदनान के आतंकवादी नेटवर्क चलाने की समीक्षा

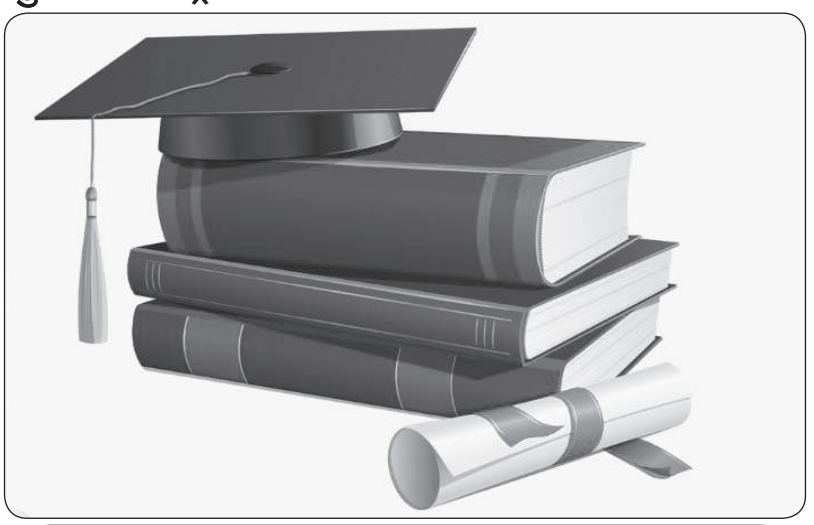

"एक वर्ग विशेष द्वारा अपने बच्चों को या तो मजहबी शिक्षा दी जाती है अथवा पढ़ने लिखने के लिए प्रेरित ही नहीं किया जाता और पढ़ाया लिखाया भी जाता है तो उसे डॉक्टर, इंजीनियर या किसी संवैधानिक पद पर आसीन होकर अपने राष्ट्र की नींव को खोखला करने की शिक्षा दी जाती है। इसके लिए उन्हें देश की उन्नति, प्रगति और विकास के बजाय अपने पंथ, संप्रदाय को आगे बढ़ाने के संस्कार दिए जाते हैं। और यही तो खतरे की घंटी है जो लगातार बज रही है, किंतु हिंदू समाज इस भयंकर आवाज को सुनकर बिल्ली के सामने कबूतर की तरह आंखें बंद करके यह समझ रहा है कि इस डरावनी समस्या का समाधान केवल आंखें बंद कर लेना ही है। जबकि बिल्ली के पंजे से बचने के लिए कबूतर को ईश्वर ने पंख दिए हैं, वह चाहे तो ऊंची से ऊंची उड़ान भर सकता है लेकिन उसका आलस्य ही उसका सबसे बड़ा शत्रु बन जाता है। इसलिए ऐसे षडयंत्रकारी लोगों से जहां सरकार को, जांच एजेंसियों को, पुलिस प्रशासन को और अधिक सतर्क होना होगा वहीं सभ्य समाज के हर नागरिक और देशभक्तों को भी जागरूक रहना होगा, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि हमारे आसपास या साथ में कार्यरत व्यक्ति का वास्तविक स्वरूप कहीं डॉ. अदनान जैसा तो नहीं है? क्योंकि ये शातिर लोग भोले-भाले लोगों के बीच छिपे हुए रहते हैं।"

आर्य समाज के संस्थापक और महान समाज सुधारक के रूप में विश्व विख्यात हमारे गुरु महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास में शिक्षा को आधार बनाकर माता-पिता, गुरु, शिष्य, राजा, प्रजा सबके कर्तव्यों पर प्रकाश डाला है। महर्षि ने वहां विस्तार से आर्ष पाठ विधि का उल्लेख करते हुए पूरी पठन-पाठन विधि बताई है। 19 शताब्दी का ये वह कालखंड था जब चारों ओर अशिक्षा, अविद्या, ढोंग, पाखंड, अंध विश्वास और सामाजिक कुरीतियां चरम पर थी। महर्षि की प्रेरणा से आर्य समाज ने गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, पाठशालाएं खोली और वैदिक ज्ञान के प्रकाश से एक नये भारत का उदय किया।

राष्ट्र सेवा और मानव निर्माण के इस अभियान में महर्षि के अनन्य शिष्य अमर क्रांतिकारी, महान शिक्षाविद स्वामी श्रद्धानंद जी, जिन्होंने 1902 में गुरुकुल कांगड़ी की हरिद्वार में स्थापना की और अनेक अन्य गुरुकुल स्थापित और संचालित किए, वहीं पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी और महात्मा हंसराज जी इत्यादि महापुरुषों ने डी.ए.वी. जैसे विश्व व्यापी शिक्षण संस्थान की स्थापना की। वर्तमान में आर्य समाज द्वारा जहां एक तरफ डी.ए.वी. शिक्षण संस्थानों के माध्यम से मानव समाज को सशक्त और सामर्थ्यवान बनाकर देश के विकास में सुदृढ़ योगदान दिया जा रहा है, वहीं वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रमुख केन्द्र गुरुकुल, कन्या गुरुकुल अहम भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। इसके इतर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा इकाई अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा जहां आदिवासी क्षेत्रों में आर्य विद्यालय, गुरुकुल, बालवाड़ी, छात्रावास और समय समय पर वैचारिक क्रांति शिविर, शिक्षक प्रशिक्षण शिविर, चरित्र निर्माण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है।

इसके अलावा आर्य समाज द्वारा सुयोग्य, मेधावी अभाव ग्रस्त छात्रों को आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के माध्यम से उच्च शिक्षा के कंपीटिशन में सफलता प्रदान करने हेतु भारत की राजधानी दिल्ली में उनके निःशुल्क भोजन, आवास और कोचिंग की व्यवस्था लगातार की जा रही है। जिसके बहुत ही सकारात्मक परिणाम प्राप्त हो रहे हैं। दरअसल आर्य समाज द्वारा संचालित शिक्षा सेवा के विषय में लिखने का कारण यही है कि हम यहां पर पाठकों को स्पष्ट बताना चाहते हैं कि आर्य समाज पूरे देश में भारत सरकार के बाद सबसे ज्यादा शिक्षण संस्थान चला रहा है। लेकिन आर्य समाज की शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा को केवल जीवकोपार्जन का साधन मात्र नहीं माना जाता बल्कि उसके साथ भारतीय संस्कृति और संस्कारों को भी पूरा महत्व दिया जाता है। राष्ट्रभक्ति, ईश्वर भक्ति, मानव सेवा और कर्तव्य परायणता का भी संदेश दिया जाता है।

क्योंकि किसी भी राष्ट्र की उन्नति, प्रगति और विकास के लिए प्रत्येक नागरिक का शिक्षित होना अत्यंत अपरिहार्य माना गया है। क्योंकि शिक्षा ही वह साधन और शक्ति है जिससे मनुष्य का शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उत्थान संभव होता है। लेकिन वर्तमान में उच्च शिक्षा प्राप्त डॉक्टर, इंजीनियर और अन्य अनेक ऊंचे-ऊंचे पदों पर बैठे हुए लोगों का आतंकवादी गतिविधियों में संलिप्त पाया जाना संपूर्ण मानवजाति के लिए एक बड़े खतरे की घंटी है। जो लगातार अपनी कट्टरपंथी, मानवता विरोधी आवाज से भयभीत किए जा रही है। अभी पिछले दिनों 27 जुलाई 2023 को महाराष्ट्र में ISIS के नेटवर्क को खंगाल रही राष्ट्रीय जाँच एजेंसी (NIA) ने प्रदेश में पाँचवी गिरफ्तारी के तौर पर डॉ. अदनान अली सरकार को पुणे से दबोचा है। जाँच एजेंसी के मुताबिक आरोपित देश की एकता, अखंडता और स्थिरता के लिए खतरा पैदा करने के साथ भारत के खिलाफ युद्ध छेड़ने की साजिश रच रहा था। 27 जुलाई को एक प्रेसनोट जारी करते हुए NIA ने इस गिरफ्तारी की जानकारी साझा की है। हालांकि राष्ट्रीय जाँच एजेंसी ने इसे बड़ी सफलता बताया है और इसे आतंकवादी गतिविधियों के खिलाफ सफलता मानना भी चाहिए, लेकिन विचारणीय बात यह है कि मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार गिरफ्तार हुआ 43 वर्षीय डॉ. अदनान अली को एनेस्थीसिया के इलाज में 16 वर्षों का अनुभव है। डॉ. अदनान अली ने साल 2001 में पुणे के बीजे गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज से MBBS किया था। इसके बाद साल 2006 में उसने उसी कॉलेज से MD एनेस्थीसिया किया। ISIS समर्थक डॉ. अदनान को इंग्लिश,

- शेष पृष्ठ 7 पर

साप्ताहिक स्वाध्याय

पंडित इंद्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित जीवनी महर्षि दयानंद से क्रमशः साभार

अमृत की तलाश

मूलशंकर जी को एक ही धुन थी कि मृत्यु से छूटने का उपाय जाना जाय। उन्हें बताया गया था कि मृत्यु से छूटने का उपाय योग है। मूलशंकर योगी की तलाश में शहर, गांव और जंगल में भ्रमण करने लगे। पहले-पहल तो नया होने के कारण उसे ठग-साधुओं ने खूब लूटा, रेशमी वस्त्र तक धरा लिये, परन्तु धीरे-धीरे कुछ विवेक होता गया वह जिज्ञासु अब ठगों और सन्तों में भेद करने लगा। घर से भागने पर पहला काम मूलशंकर जी ने यह किया था कि सामला नामक ग्राम में एक ब्रह्मचारी की प्रेरणा से दीक्षा लेकर अपना नाम शुद्धचैतन्य ब्रह्मचारी रखा। बहुत समय तक जिज्ञासु ने ब्रह्मचारी रहकर भ्रमण किया, परन्तु ब्रह्मचारी को उस समय गुजरात में संन्यासियों की भांति बना-बनाया भोजन नहीं मिलता था।

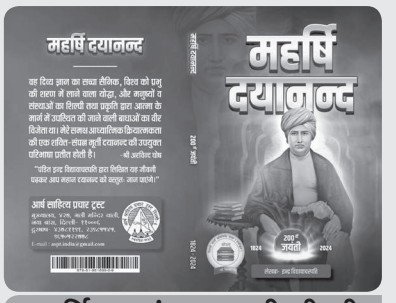

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर प्रकाशित

प्रकाशक- आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, सहप्रकाशक- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, पुस्तक प्राप्ति के लिए vedicprakashan.com ऑनलाइन प्राप्त करें अथवा 9540040339 पर संपर्क करें।

क्रमशः गतांक से आगे

मूलशंकर जी 1903 विक्रमी के ज्येष्ठ मास में घर का त्याग किया और 1917 विक्रमी के कार्तिक मास में विरजानन्द दण्डी जी के पास मथुरा पहुंचे। बीच के इन 15 वर्षों में उन्होंने एक सच्चे जिज्ञासु का जीवन व्यतीत किया। घर से सम्बन्ध तोड़ दिया। घर छोड़ने के कुछ मास बाद केवल एक बार सिद्धपुर के मेले में एक वैरागी पुत्र का समाचार पाकर मूलशंकर जी के पिता ने उन्हें आ पकड़ा था। जब पिता ने कई सिपाहियों के साथ आकर पकड़ लिया, तब पिता के चरणों में सिर झुकाने के सिवा क्या चारा था। पिता सिपाहियों के पहरे में रखकर मूलशंकर जी को घर की ओर वापस ले चले, परन्तु जिसे धुन समाई थी वह अब कैद में फंसने वाला न था। रात के समय सिपाहियों को सोते देख मूलशंकर फिर भाग निकले। दूसरा सारा दिन उन्होंने एक बड़े पेड़ पर छिपकर बिताया। पिता ऐसे बेमुरब्बत पुत्र से निराश होकर घर वापस चले गए, और मूलशंकर जी ने अपना रास्ता पकड़ लिया। इसके पश्चात् मूलशंकर जी का घरवालों से कभी साक्षात्कार नहीं हुआ।

मूलशंकर जी को एक ही धुन थी कि मृत्यु से छूटने का उपाय जाना जाय। उन्हें बताया गया था कि मृत्यु से छूटने का उपाय योग है। मूलशंकर योगी की तलाश में शहर, गांव और जंगल में भ्रमण करने लगे। पहले-पहल तो नया होने के कारण उसे ठग-साधुओं ने खूब लूटा, रेशमी वस्त्र तक ध रा लिये, परन्तु धीरे-धीरे कुछ विवेक होता गया; वह जिज्ञासु अब ठगों और सन्तों में भेद करने लगा। घर से भागने पर पहला काम मूलशंकर जी ने यह किया था कि सामला नामक ग्राम में एक ब्रह्मचारी की प्रेरणा से दीक्षा लेकर अपना नाम शुद्धचैतन्य ब्रह्मचारी रखा। बहुत समय तक जिज्ञासु ने ब्रह्मचारी रहकर भ्रमण किया, परन्तु ब्रह्मचारी को उस समय गुजरात में संन्यासियों की भांति बना-बनाया भोजन नहीं मिलता था, हाथ से बनाना पड़ता था। इससे शुद्धचैतन्य के पठन-पाठन में बहुत विघ्न होता था। उसने कई संन्यासियों से संन्यास लेने का यत्न किया, परन्तु थोड़ी आयु देखकर वे लोग संकोच करते रहे। नर्मदा नदी के तट पर घूमते हुए उन्हें पूर्णानन्द सरस्वती नाम के विद्वान् साधु के दर्शन करने का अवसर मिला। उनसे भी शुद्धचैतन्य ने संन्यास देने की प्रार्थना की। पहले तो उन्होंने कुछ संकोच किया, परन्तु अन्य साधुओं की सिफारिश आने पर संन्यास देना स्वीकार कर लिया। तब पूर्णानन्द सरस्वती से संन्यास लेकर शुद्धचेतन महर्षि दयानन्द सरस्वती बन गए।

-क्रमशः अगले अंक में...

आर्य समाज की युवा पीढ़ी के बढ़ते कदम

शिक्षा और खेल प्रतियोगिता में स्थापित कीर्तिमान

आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के छात्र अनिरुद्ध दुबे ने मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग मे प्राप्त की 8वीं रैंक

आर्य कन्या गुरुकुल चोटीपुरा की छात्रा इशिता ने पुलिस एंड फायर गेम्स 2023 में जीते तीन स्वर्ण पदक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हार्दिक बधाई

आर्य समाज द्वारा संचालित आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के विद्यार्थी श्री अनिरुद्ध दुबे जी ने मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग की वन सेवा परीक्षा 2022-23 में 8वीं रैंक प्राप्त कर अनुपम सफलता हो कि आर्य विकास प्रतिभावान छात्रों को नि:शुल्क आवास कोचिंग आदि की जाती है। परिणाम आर्य समाज की युवा परचम लहरा रही है। को इस सफलता के एवं दिल्ली आर्य ओर से हार्दिक बधाई

प्राप्त की है। ज्ञात प्रतिभा संस्थान द्वारा दिल्ली में उनके भोजन और संपूर्ण व्यवस्था की स्वरूप लगातार पीढ़ी सफलता का श्री अनिरुद्ध दुबे लिए सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा की एवं शुभकामनाएं।

सफलता के इस क्रम में आर्य कन्या गुरुकुल चोटीपुरा की छात्रा इशिता जी ने कनाडा आयोजित पुलिस 2023 में तीन जीतकर अनुपम किया है। इशिता साहस, अथक पुरुषार्थ से सफलता पर गौरवान्वित है। प्रतिनिधि सभा प्रतिनिधि सभा को हार्दिक बधाई

के विनिपेग में एंड फायर गेम्स स्वर्ण पदक कीर्तिमान स्थापित की इस अदम्य परिश्रम और सराबोर महत्वपूर्ण संपूर्ण आर्य जगत सार्वदेशिक आर्य एवं दिल्ली आर्य की ओर से इशिता एवं शुभकामनाएं।

स्वास्थ्य संदेश

मुंह तथा गले की बीमारियां –लक्षण और उपचार

मुंह तथा गले के रोगों में मुख्यत: निम्नलिखित रोग शामिल हैं: टान्सिल-प्रदाह (tonsillitis), गले की पीड़ (sore throat), गलगंड (goitre), दांत दर्द (toothache), मसूड़ों की सूजन (gingivitis) तथा मुंह का सूखना (dryness of mouth) इत्यादि।

1. टान्सिल (Tonsils)

ग्रासनली तथा श्वासनली मुंह में गले के प्रारम्भ में स्थित है। उसके दोनों तरफ दो ग्रन्थियां होती हैं, जिन्हें टान्सिल (tonsils) कहते हैं। गले के ऊपर की तरफ श्वास नली के मार्ग में स्थित इसी तरह की ग्रन्थियों को अडीनोयड (adenoids) या फेरिंजियल टान्सिल (pharyngeal tonsil) कहते हैं।

टान्सिल का शरीर को निरोग रखने में बड़ा महत्त्वपूर्ण कार्य है। ज्यों ही रोगाणु श्वास या मुंह के मार्ग से शरीर के अन्दर जाने का प्रयास करते हैं, टान्सिल उनको खत्म कर देते हैं। इस प्रकार टान्सिल शरीर को अनेक रोगों से बचाते हैं। इसके साथ टान्सिल श्वेत रक्त सैलों (white blood cells) के निर्माण में भी सहायता करते हैं।

रोग के विभिन्न कारण एवं लक्षण

टान्सिल शरीर को स्वस्थ रखने में भी मदद करते हैं परंतु संक्रमण (infection) की अवस्था में ये स्वयं भी रोगग्रस्त हो जाते हैं। संक्रमण होने से यह आकार में बड़े और कठोर होने लगते हैं। पहले यह रंग में गाढ़े लाल होते हैं और बाद में इनसे पीव निकलना प्रारंभ हो जाता है। अगर पीव अन्दर चली जाए तो फेफड़ों को नुकसान पहुंचा सकती है। परंतु ऐसा बहुत कम होता है। टान्सिल में कभी-कभी सफेद धब्बे बन जाते हैं। जब टान्सिल काफी सूज जाते हैं तो गले में काफी दर्द, कोई

-क्रमशः अगले अंक में...

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के तत्वावधान में 33वां चार दिवसीय आर्य महासम्मेलन संपन्न

आर्य महासम्मेलन में अमेरिका सभा के प्रधान, महामंत्री, मुख्य अतिथि एवं भारत से सभा महामंत्री विनय आर्य, डॉ. राजेंद्र विद्यालंकार एवं अन्य महानुभावों के हुए विशेष उद्बोधन

आर्य समाज के वरिष्ठ और विशिष्ट अधिकारी, कार्यकर्ता, सदस्य और आर्य परिवारों के स्त्री, पुरुष, बच्चे और युवा पीढ़ी सम्मिलित हुई। प्रतिदिन कार्यक्रम का शुभारंभ यज्ञ से हुआ, जिसमें आर्यजनों ने आहुति देकर विश्व कल्याण की ईश्वर से प्रार्थना की, इसके उपरांत मधुर भजनों में महर्षि दयानंद सरस्वती की महिमा, ईश्वर भक्ति और अन्य प्रेरक विषयों का बखान किया गया। अमेरिका के युवाओं द्वारा महर्षि दयानंद के ऊपर सामूहिक गायन, नाटिका मंचन, सांस्कृतिक कार्यक्रम इत्यादि विशेष आकर्षण का केंद्र रहे। महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के स्थापना दिवस को लेकर आयोजित आर्य महासम्मेलन में महर्षि की शिक्षाओं और संदेशों को जन-जन तक पहुंचाने पर बल दिया गया और आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास की भी वृहद चर्चा हुई, आगे आने वाले समय में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार और विस्तार के लिए सक्रिय भूमिका निभाने और आर्य समाज के सेवा कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए अधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने संकल्प लिए।

इस अभूतपूर्व ऐतिहासिक अवसर पर भारत से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी और वैदिक विद्वान डॉ. राजेंद्र विद्यालंकार जी भी उपस्थित रहे। डॉ. राजेंद्र विद्यालंकार जी ने उपस्थित आर्यजनों को अपने उद्बोधन में कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा स्थापित आर्य समाज के सिद्धांत, मान्यता और परंपराएं पूर्ण रूप से मानव समाज को कल्याण के पथ पर अग्रसर करने वाली हैं। महर्षि दयानंद का जीवन परोपकार का सबसे बड़ा प्रेरक उदाहरण है, उनके द्वारा निर्मित आर्य समाज के नियम संसार की उन्नति के पर्याय हैं। अमेरिका सभा द्वारा आयोजित यह 33वां आर्य महासम्मेलन महर्षि दयानंद की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस को लक्ष्य में रखकर आयोजित किया गया है। इस सुंदर और ऐतिहासिक आयोजन के लिए मैं आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के अधिकारियों और कार्यकर्ताओं को हार्दिक बधाई देते हुए गौरव का अनुभव कर रहा हूं।

आर्य महासम्मेलन में आर्य समाज के सिद्धांतों के अनुसार योगासन करते हुए आर्य नर-नारी एवं यज्ञ करते हुए आर्य बालक-बालिकाएं।

जुलाई 2024 में न्यूयॉर्क में आयोजित होने वाले आर्य महासम्मेलन के भव्य आयोजन के लिए ओम ध्वज हाथ में लेकर संकल्प लेते हुए अधिकारीगण।

सभा महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने आर्य जी ने अमेरिका के आर्यजनों को महर्षि दयानंद जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में 33वें आर्य महासम्मेलन की बधाई देते हुए कहा कि आर्य समाज महर्षि दयानंद सरस्वती जी का विश्वव्यापी संगठन है, महर्षि की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस को लेकर जितना उत्साह भारत में दिखाई दे रहा है उतना ही जोश अमेरिका में है। अमेरिका के आर्यजन और अधिकारी हमेशा मानव सेवा और परोपकार के लिए समर्पित रहते हैं। महर्षि दयानंद की शिक्षाओं और वैदिक विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने के लिए आपका समर्पण भाव प्रशंसनीय है।

आपने आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा जुलाई 2024 में न्यूयॉर्क में आयोजित होने वाले आर्य महासम्मेलन की घोषणा करते हुए कहा कि इस विशेष अवसर पर अमेरिका के बाहर से 300 से अधिक आर्य प्रतिनिधि न्यूयार्क सम्मेलन में उपस्थित होंगे, जोकि सम्मेलन में कुल उपस्थिति का 10 प्रतिशत होगा, अमेरिका के आर्यजनों ने संकल्प लिया कि न्यूयॉर्क में 5000 हजार लोग उपस्थित रहेंगे। विनय आर्य जी ने कहा कि महर्षि दयानंद ने जो वेद की ज्योति जलाई थी वह अमेरिका में पूरी तरह से

- शेष पृष्ठ 5 पर

वैदिक योग पुस्तक का विमोचन, पुस्तकालय में स्वाध्याय और सम्मेलन में आए हुए अतिथियों का आई कार्ड बनाते हुए कार्यकर्ता, अधिकारीगण एवं अमेरिका की 32 आर्य समाजों तथा अन्य स्थानों से उपस्थित अधिकारी, कार्यकर्ता उमंग उत्साह से भरे हुए आर्यजनों के सामूहिक चित्र।

आर्य महासम्मेलन के मुख्य अतिथि एवं आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के अधिकारियों को स्मृति चिन्ह एवं वेद भेंट करते हुए दिल्ली सभा के महामंत्री विनय आर्य जी एवं द्वितीय चित्र में आर्य समाज के वरिष्ठ एवं विशिष्ट अधिकारियों का सम्मान करते हुए सामूहिक चित्र।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में श्रवणी पर्व का समस्त आर्य समाज और शिक्षण संस्थाएं करें उत्साह पूर्वक आयोजन

–धर्मपाल आर्य

आर्य पर्व पद्धति में श्रावणी उपाकर्म का विशेष महत्व है। इस वर्ष यह पर्व महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस पर आयोजित दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला के मध्य आया है। अत: सभी आर्य समाज श्रावणी पर्व पर महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए, वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रचार-प्रसार और विस्तार के लिए पूरी शक्ति के साथ विशेष आयोजन करें, महर्षि दयानंद सरस्वती जी की जीवनी, सत्यार्थ प्रकाश और उनके अन्य ग्रंथों का वितरण करें, अपने क्षेत्र के प्रशासनिक अधिकारियों, सांसद, विधायक, निगम पार्षद इत्यादि महानुभावों को भी अपने कार्यक्रमों में आमंत्रित करें और आर्य समाज की मान्यता, परंपरा और सिद्धांतों से उन्हें परिचित कराने का प्रयास करें। अपने घरों के बच्चों और युवाओं को भी कार्यक्रमों में सहभागी बनाएं।

इस अवसर वेद प्रवचन, वेद स्वाध्याय, महर्षि दयानंद सरस्वती जी की जीवनी, आर्य समाज का गौरवशाली इतिहास और आर्ष ग्रन्थों के साप्ताहिक स्वाध्याय के आयोजन करें। आर्य समाजों में आयोजित कार्यक्रमों में उमंग, उत्साह और उल्लास का ऐसा वातावरण निर्मित करें जिससे हर आयु वर्ग के लोग आकर्षित होवे और आर्य समाज के भजन, वेद प्रवचन, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा और साधना से लाभ प्राप्त करें।

पर्व प्रेरणा का प्रकाश

वैदिक पर्व पद्धति के अनुसार मनाया जाने वाला प्रत्येक पर्व शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास की प्रेरणा प्रदान करता है। जीवन की यात्रा में चलते-चलते किसी न किसी कारण से मानव मन में उदासी, निराशा और चिंता आदि का आना स्वाभाविक है। इसीलिए पूर्वजों के अनुसार समय-समय पर हमारे यहां पर्व मनाने की परंपरा अति प्राचीन है। क्योंकि पर्वों में अंतर्निहित प्रेरणा मनुष्य को नई शक्ति, नया उत्साह और नया विचार देकर उसे आगे बढ़ने, ऊंचा उठने के लिए प्रेरित करते हैं। श्रावणी पर्व का अवसर हमारे सामने है। इस पर्व में वेदों के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने का विशेष महत्व माना गया है। अपने वैदिक ज्ञान-विज्ञान को पढ़ने, सुनने, सोचने, समझने और उस पर गहराई से चिंतन-मनन कर अपनाने से ही मनुष्य जीवन की ऊंचाई प्राप्त करता है।

पार्कों और खुले स्थानों पर भी करें प्रचार

इस वर्ष हमें आर्य समाजों में या उनके बाहर पार्कों आदि में बड़े कार्यक्रम उत्साह पूर्वक करने चाहिए। जिससे वेदादि शास्त्रों का संदेश घर-घर तक पहुंचे। यज्ञ में सब लोग आहुति देवें, सबके घरों में यज्ञ की सुगंध पहुंचे, वेद मंत्रों की ध्वनि पहुंचे और नियमित यज्ञ करने का सब संकल्प लें, आर्य समाजों के श्रावणी पर्व के आयोजनों से सभी लोग लाभान्वित हों, गौरवान्वित हों और सबका जीवन आशान्वित हो।

स्वाध्याय से बढ़ता है आत्मबल

आर्य समाज के विद्वान आजीवन विद्यार्थी की भांति स्वाध्याय करते और कराते हैं। परिणाम स्वरूप हमारे वैदिक साहित्य का भंडार समृद्ध है। इसको निरंतरता प्रदान करने के लिए हमारे आचार्यों, पुराहितों को भी अपनी योग्यता को बढ़ाने के लिए इन दिनों में विशेष स्वाध्याय करना चाहिए। प्रत्येक आर्य समाजी को अपने महापुरूषों का प्रेरक जीवन और आर्य समाज का इतिहास भी पढ़ना चाहिए। स्वाध्याय से आत्मबल बढ़ता है, मनोबल में वृद्धि होती है और जीवन का समुचित विकास स्वाध्याय से ही संभव है।

स्वाध्याय की महान महिमा

वैदिक धर्म में प्रत्येक वर्ण और आश्रमों के मनुष्यों के लिए वेदादि शास्त्रों का स्वाध्याय अनिवार्य माना गया है। ब्राह्मण वर्ण और ब्रह्मचर्य आश्रम की तो नींव ही स्वाध्याय पर टिकी है अर्थात् विद्यार्थियों को और ब्राह्मण, पुरोहित-आचार्यों को विशेष रूप से स्वाध्याय शील होना ही चाहिए। क्षत्रिय वर्ग अर्थात् सैन्य बल तथा सेना के उच्च अधिकारी लोग स्वाध्यायशील होंगे तो सुरक्षा और अनुशासन की व्यवस्था उचित होगी। इसी तरह व्यापारी वर्ग को भी स्वाध्याय का विशेष लाभ यह होता है कि उनमें सात्विकता का समावेश रहेगा। शुद्रों को भी अपने उत्थान के लिए स्वाध्याय करना ही चाहिए।

स्वाध्याय से आती है जीवन में नवीनता

अधिकांशतया एक उम्र तक कुछ विशेष जानने की और सीखने की जिज्ञासा मनुष्य के भीतर दिखाई देती है, उसके बाद मनुष्य को आलस्य घेर लेता है और व्यक्ति पढ़ना-पढ़ाना बंद कर देता है। अगर कोई उसे स्वाध्याय के लिए प्रेरित भी करे तो वह यही कहता है कि अब पढ़कर क्या करना? क्या करेंगे पढ़-लिखकर, बहुत पढ़ लिया, बस अब और नहीं। लेकिन श्रावणी पर्व प्रेरित करता है कि जीवन में नवीनता बनाए रखने के लिए निरंतर स्वाध्याय अति आवश्यक है। जब तक आप सीखते रहते हैं तब तक आपके जीवन में नयापन बना रहता है।

अपार और अनुपम है वैदिक ज्ञान संपदा

समुद्र के किनारे पर जो रेत का ढेर होता है उसमें से एक कण के बराबर भी मनुष्य पूरे जीवन में नहीं जान पाता और हमारी ज्ञान संपदा कितनी है, जितना कि समुद्र के किनारे रेत का भंडार। ईश्वर की अमृतवाणी वेद, उपनिषद, दर्शन शास्त्र, महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश आदि अनेक ग्रंथ, स्मृति ग्रंथ, नीति ग्रंथ, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, रामायण, गीता, महाभारत और उपरोक्त विषयों पर आधारित हजारों पुस्तकें वैदिक साहित्य के रूप में उपलब्ध हैं। इसलिए श्रावणी पर्व पर संकल्प करें कि हम प्रतिदिन नियमपूर्वक आर्ष ग्रंथों का स्वाध्याय करेंगे। नित निरंतर कुछ-न-कुछ वैदिक ज्ञान धारण कर अपने जीवन को गरिमा प्रदान करते रहेंगे।

श्रवण में वेद स्वाध्याय का महत्व

शारीरिक उन्नति, प्रगति का आधार जैसे अन्न को माना गया है, वैसे ही मन की विशालता और महानता का आधार स्वाध्याय है। प्राचीन काल में तो स्वाभाविक रूप से ही लोग वेदादि शास्त्रों का स्वाध्याय प्रतिदिन करते थे, किंतु वर्षा ऋतु में वेदपाठ, धर्मोपदेश और ज्ञान चर्चाओं का विशेष आयोजन किया जाता था। श्रावणी पर्व पर या नियमित वेद पढ़ने का मतलब है कि आप ईश्वरीय आज्ञाओं को जान रहे हैं और वेदों पर आधारित ऋषि मुनियों के द्वारा निर्मित ग्रंथों के पढ़ने का सीधा अर्थ है कि आप युग युगांतरों के ऋषियों के अनुभूत विचारों को आत्मसात कर रहे हैं। इसलिए आर्य समाजों में यज्ञोपरांत वैदिक प्रार्थना का गान भी किया जाता है-

सब वेद पढ़ें, सुविचार बढ़ें,
बल पायें चढ़ें, नित ऊपर को,
अविरुद्ध रहे, ऋजुपंथ गहें,
परिवार कहें, वसुध भर को,
दिन फेर पिता, वर दे सविता,
हम आर्य करें निज जीवन को,
दिन फेर पिता वर दे सविता,
हम आर्य करें भूमंडल को

अमेरिका आर्य महासम्मेलन का शेषभाग

महर्षि दयानंद सरस्वती जी के शिष्यों के चित्र और संपूर्ण विश्व के आर्य समाजों के मैप एवं अन्य गतिविधियों की प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए आर्यजन।

प्रज्ज्वलित हो रही है। भारत में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए आपने बताया की महर्षि दयानंद जी की जन्म भूमि टंकारा में 11-12 फरवरी 2024 को भव्य आयोजन के साथ महर्षि की 200वीं जयंती मनायी जाएगी और इस क्रम में महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा मुंबई में आर्य समाज की स्थापना की गई थी, अत: मुंबई में अप्रैल 2024 में आर्य समाज का स्थापना दिवस मनाया जाएगा इसके अतिरिक्त अक्टूबर 2025 में आर्य समाज का एक अभूतपूर्व अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आयोजित किया जाएगा, जिसमें पूरे विश्व से 5,00,000 से अधिक आर्यजन एकत्रित होंगे और महर्षि दयानंद सरस्वती का संदेश पूरे संसार में फैलाया जाएगा। विनय आर्य जी ने वहां पर उपस्थित सभी आर्य महानुभावों को बधाई देते हुए स्वामी श्रद्धानंद, महात्मा हंसराज, पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी इत्यादि सभी आर्य समाज के महापुरुषों को स्मरण किया और स्वामी श्रद्धानंद, महात्मा हंसराज के परिवार के लोगों को बधाई दी तथा अपने विशेष संदेश में कहा पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी को केवल 9 वर्ष की आयु ही आर्य समाज के प्रचार-प्रसार और विस्तार के लिए मिली थी, जबकि महर्षि दयानंद ने केवल 19 वर्ष में मानव समाज सुधार और विश्व कल्याण के लिए इतना विशाल और विराट कार्य किया। स्वामी श्रद्धानंद जी ने 30 वर्ष तक सेवा के अनुपम कार्य किए। अत: हम सभी आर्यजनों को यह समझना चाहिए कि हमारा जितना भी समय और शक्ति आर्य समाज की सेवा में लगे वही सार्थक होगी। इसलिए अपने मन को संकल्पित करें और आर्य समाज को आगे बढ़ाने के लिए पूरी शक्ति के साथ जुट जाएं।

इस अवसर पर महर्षि दयानंद सरस्वती के 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस पर 2 वर्षीय आयोजनों के अध्यक्ष, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान और जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी की ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका को स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। श्री आर्य जी व्यस्त होने के कारण इस कार्यक्रम में नहीं पहुंच पाए लेकिन उन्होंने अपना शुभकामना संदेश विनय आर्य जी के माध्यम से आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका को भिजवाया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से भी आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका को स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया। अमेरिका के सभी आर्य समाजों के वरिष्ठ अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों सहित आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका में अत्यंत उत्साह की लहर दृष्टिगत हुई और सभी महर्षि की 200वीं जयंती और आर्य समाज के स्थापना दिवस के 2 वर्षीय आयोजनों को लेकर अत्यंत उत्साहित दिखाई दिए। प्रेम प्रसन्नता के वातावरण में चार दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अपार सफलताओं के साथ संपन्न हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के प्रधान श्री भुवनेश खोसला जी ने सभी आगंतुक महानुभावों का धन्यवाद किया और 2024 में न्यूयार्क में होने वाले महासम्मेलन हेतु अधिकारियों को सक्रिय रूप से कार्य करने का आह्वान् किया। **-संपादक**

In Search of Amrit

Continuing the last issue

On some points water was knee-deep, but it was very deep on some other points. Width of the river was about 10 hands. Water was ice cold. There were some pointed stones and big pieces of ice on some points. He had worn thin clothes on his body. His feet were quite naked. He became quite senseless for some time in water, but he saved himself with strong determination. He crossed across the river some how but he was feeling very cold and hungry. Feet were bleeding so, he dared not to move further. But it was quite dreadful and risky to pass a night there. At that time God helped his devotee. Two hill travellers reached there. Though they could not ask Daya Nand to accompany them, but even then he got courage. After taking rest for some time, Swamiji stood up and moved for Vasudha holy place. He took rest for some time and returned towards Badri Nayaran.

He was quite disappointed in places near Badri Nayaran as he ouild not see any Yogi there. So, he set out for ground in lower places. He reached Garh Muktesh crossing Rampur, Drone Sagar, and Muradabad. He was walking near the bank of the river. He happened to see a dead body flowing in the river. Daya Nand had already studied much about different parts of body in 'Hathyog Pradipika' and other books. To test whether his knowledge was true or not, he jumped into the river and brought the dead body towards the bank of the river. He kept the dead body on the ground and pierced the body with the help of a knife. He came to know that all the books were useless for him. So, he threw all of them into the river. After visiting banks of river Ganga, he started for South and travelled near banks of Narmda river for many days. There are very dense forest near by. In one of the forest he happened to came across a bear. He was not at all afraid of the animal but moved towards with his stick (lathi). The animal was afraid of the stick and ran away from there into the forest. He tried to search some suitable place to stay in the dark. He came across some cottages. When he reached near the cottages, he could not find any awakening person. Then he passed the night sitting on a tree. Next morning some people saw Swamiji, they begged pardon for the inconvenience for the last might. They gave him proper respect.

Daya Nand visited places near banks of Narmada for about three years. During that period he came to know that a Yogi and Dandi Swami lived in Mathura. He at once set out for Mathura and reached cottage of Swami Virja Nand on Kartik Shudi 2, Vikrami Samvat 1917, that is 14 th November 1860 and knocked at the door.

Swami Daya Nand visited hilly places and planes. He came cross so many problems and had to bear great difficulties. What for did he bear all those? It was all to achieve Satya Yoga and salvation (Moksha). But neither the cold weather of Himalaya nor the cold water of Ganga and Narmda could pacify (finish) strong determination of his heart to search the way to Moksha and the true Yogi. Now the determined Daya Nand reached the cottage of Dandi Swami Virja Nand. Now let us see as to what extent he succeeds in his mission!

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज नरेला, दिल्ली-40 का निर्वाचन संपन्न
प्रधान : श्री संजय खत्री
महामंत्री : श्री सुरेश खत्री
कोषाध्यक्ष : श्री जीत सिंह

आर्यसमाज मोलरबंद का निर्वाचन संपन्न
प्रधान : श्री गजेन्द्र सिंह चौहान
मंत्री : श्री श्याम सिंह यादव
कोषाध्यक्ष : श्री नेतराम आर्य

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार की ओर से नवनिर्वाचित अधिकारियों को हार्दिक बधाई।

आचार्य की आवश्यकता है

आर्ष कन्या गुरुकुल, केरलम् के लिए गुरुकुल शिक्षा पद्धति से सुशिक्षित संस्कृतनिष्ठ कौमुदी व्यवहारिक ज्ञान युक्त आचार्य की आवश्यकता है।

संपर्क करें- पं. गुरुदत्त भवन
कारलमन्ना पालक्काड
जनपद- केरलम् पिन- 679506
मो. नं.- 7907077891

आर्यो का मेला! ।। ओ३म्।। आर्यो का मेला!

चलो ! दयानन्द के सिपाहियों, समय पुकार रहा है।
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में –
महर्षि दयानन्द सरस्वती की २००वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष में
उत्तर प्रदेश में आर्यों का कुम्भ

ज्ञान ज्योति महोत्सव

दिनांक :- २६, २७, २८ व २९ अक्टूबर २०२३, दिन :- गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार व रविवार

स्थान - राजघाट गंगा तट

भव्य शोभायात्रा :- २६ अक्टूबर महर्षि आगमन के १५ तीर्थ स्थानों पर १०० कि॰मी॰ दर्शनीय एवं भव्य शोभायात्रा।
विशेष :- विभिन्न प्रान्तों से आने वाले, अलीगढ़का ट्रेन टिकट आरक्षित करलें। जिससे आप समय से सहभागी हो सकें ।
आयोजक :- महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल महाविद्यालय, (ब्रह्माश्रम) राजघाट (नरौरा) बुलन्दशहर (उ०प्र०)
सम्पर्क सूत्र :- 9163013246, 7618196871, 9084930931, 9758980233, 9411488209

ओ३म्

200वीं जयंती के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

के तत्वावधान में

महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज

तथा

वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार हेतु विक्रय केन्द्रों का

शुभारम्भ

रविवार, 20 अगस्त, 2023
रेलवे स्टेशन आगरा कैंट- मध्यान्ह 11.30 बजे
रेलवे स्टेशन आगरा फोर्ट- अपराह्न 02.30 बजे
प्लेटफार्म नंबर: 2-3

आप सादर आमंत्रित हैं

निवेदक

सभी आर्य समाजों के अधिकारी और कार्यकर्ता
(दिल्ली एवं आगरा)

प्रेरक प्रसंग

मैं लूटने के लिए डॉ. नहीं बना हूं

सत्यार्थप्रकाश का अंग्रेजी में अनुवाद करने वाले सुप्रसिद्ध विद्वान आर्यनेता डॉ. चिरंजीवजी भारद्वाज जब लाहौर में रहते थे तो डॉ. के रूप में वे एक असाधारण चिकित्सक समझे जाते थे। उनके विरोधी भी उनकी योग्यता के आगे नतमस्तक थे। यह भी सब मानते थे कि डॉ. चिरंजीवजी लोभ से कोसों दूर हैं।

यह उन्हीं दिनों की घटना है कि श्री लाला लालचन्दजी एम.ए. गम्भीर रूप से रुग्ण हो गये। एक पुराने अनुभवी डॉ. उनका इलाज कर रहे थे। यह डॉ. गम्भीर रोगियों की चिकित्सा में परामर्श व सहायता के लिए डॉ. चिरंजीवजी को बुला लिया करते थे। बुलाने पर डॉ. चिरंजीवजी भारद्वाज रायबहादुर लालचन्दजी के घर गए। आप तीन-चार दिन लगातार रायबहादुरजी के घर पर जाते रहे। रायबहादुर लालचन्दजी को आप पर गहरा विश्वास हो गया। आपके इलाज से स्वल्पकाल में ही लालचन्दजी के स्वास्थ्य में बड़ा सुधार हुआ।

पाँचवें दिन डॉ. चिरंजीवजी ने श्री रायबहादुर से कहा, ''अब मैं समझता हूँ कि मेरी उपस्थिति की आपको कोई आवश्यकता नहीं है। अब आपका स्वास्थ्य सुधर गया है।''

लाला लालचन्द ने कहा, ''डॉक्टर साहब मैं आपके हाथों में हूँ। जैसा आप उचित समझें करें'' इस पर भी डॉ. जी ने अपने उपर्युक्त शब्द दुहराते हुए रायबहादुर को सान्त्वना दी कि आपको मेरी उपस्थिति की अब कोई आवश्यकता नहीं है।

-क्रमशः अगले अंक में...

-प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

पृष्ठ 2 का शेष

हिंदी, मराठी, और जर्मन भाषाओं का अच्छा ज्ञान है। कोर्स की कई ऐसी किताबें भी हैं जिसमें डॉ. अदनान अली ने सहायक प्रकाशक के तौर पर काम किया है। यह इतना पढ़ा लिखा, सफल व्यक्ति आतंकवादी संगठन के लिए कार्य क्यों कर रहा था? एक तरफ देश में जहां बेरोजगारी का हर क्षेत्र में, हर रोज रोना रोया जाता है, वहीं इस व्यक्ति को तो उच्च शिक्षा और अच्छी नौकरी भी प्राप्त थी और डाक्टरी के क्षेत्र में 16 वर्षों का बड़ा अनुभव भी प्राप्त था? फिर इसने ऐसा अपराधी कदम क्यों उठाया? इसका सीधा सा मतलब है कि केवल शिक्षित होना और अच्छे जीवन यापन के लिए नौकरी प्राप्त कर लेना ही शिक्षा का उद्देश्य नहीं है, शिक्षा के साथ संस्कार भी बहुत आवश्यक है। तभी एक पढ़ा लिखा योग्य व्यक्ति राष्ट्र और मानवता की सेवा कर सकता है। वरना तो डॉ. अदनान ही क्यों ऐसे अनेकों उदाहरण हैं जो पढ़े लिखे सभ्य समाज के माथे पर कलंक हैं।

इसका सबसे बड़ा कारण जो सर्वविदित है कि एक वर्ग विशेष द्वारा अपने बच्चों को या तो पढ़ने लिखने के लिए प्रेरित ही नहीं किया जाता, और पढ़ाया लिखाया भी जाता है तो उसे बड़े पद डॉक्टर, इंजीनियर या किसी संवैधानिक पद पर आसीन होकर अपने राष्ट्र की नींव को खोखला करने की शिक्षा दी जाती रही है। इसके लिए उन्हें देश की उन्नति, प्रगति और विकास के बजाय अपने पंथ, संप्रदाय को आगे बढ़ाने के संस्कार दिए जाते हैं। और यही तो खतरे की घंटी है जो लगातार बज रही है, किंतु हिंदू समाज इस भयंकर आवाज को सुनकर बिल्ली के सामने कबूतर की तरह आंखें बंद करके यह समझ रहा है कि इस डरावनी समस्या का समाधान केवल आंखें बंद कर लेना ही है। जबकि बिल्ली के पंजे से बचने के लिए कबूतर को ईश्वर ने पंख दिए हैं, वह चाहे तो ऊंची से ऊंची उड़ान भर सकता है लेकिन उसका आलस्य ही उसका सबसे बड़ा शत्रु बन जाता है। इसलिए ऐसे षड्यंत्रकारी लोगों से जहां सरकार को, जांच एजेंसियों को, पुलिस प्रशासन को और अधिक सतर्क होना होगा वहीं सभ्य समाज के हर नागरिक और देशभक्तों को भी जागरूक रहना होगा, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि हमारे आसपास या साथ में कार्यरत व्यक्ति का वास्तविक स्वरूप कहीं डॉ. अदनान जैसा तो नहीं है? क्योंकि ये शातिर लोग भोले-भाले लोगों के बीच छिपे हुए रहते हैं।

डॉ. अदनान पुणे के कोंढवा इलाके में रहता था। डॉ. अदनान अली के घर की तलाशी के दौरान इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स, आतंकी संगठन ISIS से जुड़े कई दस्तावेज और तमाम अन्य आपत्तिजनक सामग्री मिली है। इन्हे सील करके जाँच की जा रही है। अब तक की प्रारम्भिक जाँच में सामने आया है कि डॉ. अदनान भारत के खिलाफ युद्ध छेड़ने की मंशा से ISIS संगठन में युवाओं की भर्ती की कोशिशों के साथ आतंकी संगठन की हिंसक गतिविधियों को भारत में फैलाने की साजिश रच रहा था। NIA ने प्रथम दृष्टया अदनान की हरकतों को देश की एकता, अखंडता, सुरक्षा और संप्रभुता के खिलाफ माना है। डॉ. अदनान व उसकी गैंग से जुड़े अन्य संदिग्धों के खिलाफ NIA ने 28 जून, 2023 को FIR दर्ज किया था। डॉ. अदनान अली से पहले 3 जुलाई, 2023 को NIA ने मुंबई से 4 अन्य संदिग्धों को गिरफ्तार किया था।

-संपादक

महर्षि दयानन्द उवाच
परोपकारी एवं प्रेरक शिक्षाएं

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रमुख रचना सत्यार्थ प्रकाश से लेकर उनकी जीवनी, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, संस्कारविधि, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्य रत्नमाला, सवमंतव्यामंतव्य प्रकाश, उपदेश मंजरी आदि अनेक ग्रंथों से चयनित परोपकारी और प्रेरक शिक्षाएं आर्य संदेश के नियत नियमित कॉलम में महर्षि दयानंद उवाच के नाम से प्रकाशित की जा रही हैं। सभी पाठकों से अनुरोध है कि महर्षि दयानंद सरस्वती की इन जनकल्याण कारी शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सभी आप इनका सोशल मीडिया पर प्रचार-प्रसार करें और महर्षि के ऋण से उऋण होने का प्रयास करें...

अप्रामाणिक व्याकरण ग्रंथः– मैं शेखर, मनोरमा आदि जाली व्याकरणों को नहीं मानता हूं। **(म. द. च. पृ. 327)**

अप्रीतिः– परस्पर प्रीति के बिना न गृहाश्रम का निश्चित सुख, न उत्तम सन्तान और न प्रतिष्ठा वा लक्ष्मी आदि श्रेष्ठ पदार्थों की प्राप्ति कभी होती है। **(व्यवहारभानु पृ. 21)**

अभक्ष्य पदार्थ– विदेशी लोग वेद में वर्णित अभक्ष्य वस्तुओं का भक्षण करते हैं। यह धर्म विरुद्ध है। हम लोगों को ये वस्तुएं नहीं ग्रहण करनी चाहिए। खानपान में ऐसे लोगों के संसर्ग से दूर रहकर अपने खाने-पीने की विधि सुरक्षित रखने की व्यवस्था विदेश में करनी चाहिए। **(ऋ. दया. आ. स. से सं. म. अभि. पृ. 84)**

अभिमानः– अभिमान अर्थात् अहंकार है। वह सब शोभा और लक्ष्मी का नाश कर देता है। इस वास्ते अभिमान करना न चाहिए। **(सत्यार्थ प्रकाश पृ. 34)**

अभिलाषाः– हमारा शरीर बहुत देर तक नहीं रहेगा। आप आजीवन हमारी पुस्तकों से उपदेश लेते रहना। जहां तक बन पड़े अपने भूले भटके भाइयों को भी सन्मार्ग दिखलाते रहना। **(श्रीमद्दयानन्द प्रकाश पृ. 405)**

अमूर्त का ध्यान कैसे करें:– किसी मूर्तिमान पदार्थ का ध्यान नहीं करना चाहिए। ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वसृष्टि का कर्ता, सृष्टि को एकक्रम में चलाने वाला, नेता, पालनकर्ता और ऐसे ही अनेक ब्रह्मण्डों का स्वामी है, उसका स्मरण करके उसकी महिमा का ध्यान करना चाहिए। परमेश्वर के गुणों का चिन्तन उसकी महिमा का वर्णन, संसार के उपकार में चित्तवृत्ति लगाने की प्रार्थना करना यही ध्यान है। **(महर्षि दयानन्द जी. पृ. 577)**

शोक समाचार

माता ईश्वर रानी मेहता जी का निधन

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की सेवाभावी प्रेरणा स्तम्भ, माता ईश्वर रानी मेहता जी का 02 अगस्त 2023 को अकस्मात निधन हो गया। उन्होंने लगातार 40 वर्षों तक दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा आदिवासी क्षेत्रों में संचालित सेवा कार्य अत्यंत समर्पित भाव से किया। उनका अन्तिम संस्कार लोदी रोड श्मशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। संघ की ओर से प्रधान श्री सुरेन्द्र आर्य जी एवं महामंत्री श्री जोगेन्द्र खट्टर जी ने गहरी शोक संवेदना व्यक्त की।

श्री गोपाल स्वरूप सरीन जी का निधन

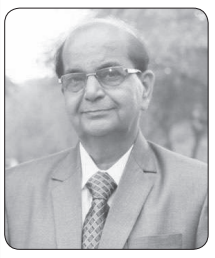

आर्य समाज मानसरोवर गार्डेन के पूर्व मंत्री एवं कोषाध्यक्ष श्री गोपाल स्वरूप सरीन जी का 29 जुलाई 2023 को अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी श्रद्धांजलि सभा 1 अगस्त 2023 को आर्य समाज कीर्ति नगर में संपन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त व परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -संपादक

सोमवार 07 अगस्त, 2023 से रविवार 13 अगस्त, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं0 डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 09-10-11 अगस्त, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 09 अगस्त, 2023

आर्य रत्न पंडित रतिराम शर्मा जी की स्मृति में व्याख्यान सत्र संपन्न

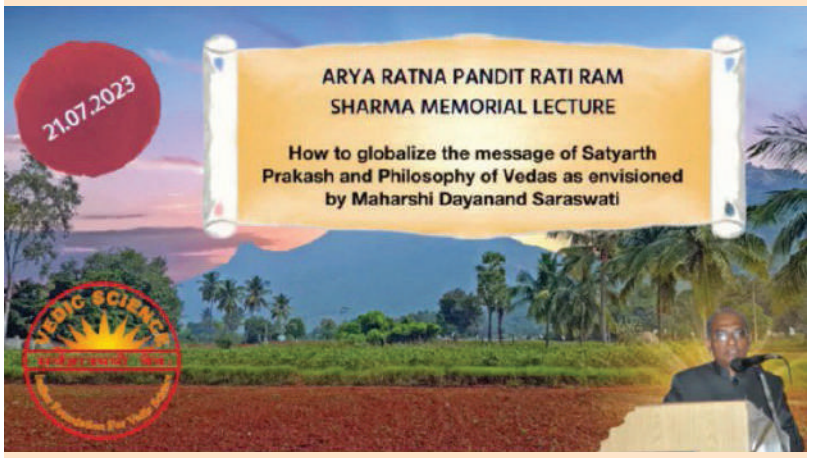

महर्षि दयानंद सरस्वती जी के वैदिक दर्शन और सत्यार्थ प्रकाश के संदेश को वैश्विक कैसे किया जाए? विषय पर भारत सहित कनाडा, मॉरिशस, अमेरिका त्रिनिडाड आदि देशों के विद्वानों द्वारा दिए गए व्याख्यान।

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक चेयर (यू.जी.सी.) द्वारा 21 जुलाई 2023 को ''महर्षि दयानंद सरस्वती जी के वैदिक दर्शन और सत्यार्थ प्रकाश के संदेश को वैश्विक कैसे किया जाए'' विषय पर ऑनलाइन व्याख्यान सत्र का आयोजन किया गया। यह व्याख्यान सत्र आर्य समाज द्वारका के प्रधान डॉ. आनंद शर्मा जी के पूज्य पिता जी स्वर्गीय श्री रतिराम जी की पुण्य स्मृति में आयोजित किया गया। इस व्याख्यान में देश-विदेश के कई आर्य विद्वानों और प्रतिनिधियों ने भाग लिया तथा निर्धारित विषय पर आपने विचार विस्तार से रखे।

कार्यक्रम का प्रारंभ डॉ. सुमित्रा जी द्वारा वैदिक मंगलाचरण के साथ हुआ। डॉ. आनंद शर्मा जी ने आयोजन की पृष्ठभूमि बताई तथा विश्व में इसकी ज्वलंत आवश्यकता को सामने रखा। कार्यक्रम का संचालन वेनकुवंर, कनाडा से जुड़े श्री अश्विनी राजपाल जी ने किया। मॉरिशस से जुड़े आयुर्वेदज्ञ डॉ. कोमल चन्द्र राधाकिशन जी ने अपने व्याख्यान में बताया कि कोरोना विभीषिका के बाद से विश्व नई दिशा की खोज में है। आपने सत्यार्थ प्रकाश के वैश्विक संदेश को प्रचारित करने के लिए मुख्य बिन्दु बताए, जैसे इसके सभी अध्यायों का सरलीकरण, इसका अन्य भाषाओं में अनुवाद, अनुभवी लेखकों द्वारा सत्यार्थ प्रकाश के सन्देश का संक्षेप में लेखन, आर्यसमाज से इतर समुदायों में इसका अध्यापन, इसके अच्छे संदेशों का प्रसार, बच्चों, युवाओं, प्रौढ़ और वृद्धों को इस ग्रन्थ का सरल रूप में अध्यापन तथा महर्षि दयानन्द के संदेशों के प्रयोगिक उपयोग पर विचार करना। अनन्तर श्री कृष्णकांत शास्त्री जी ने सत्यार्थ प्रकाश में उल्लिखित शिक्षा व्यवस्था का प्रकाश डालते हुए आचार मूलक शिक्षा तथा पुरषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति हेतु सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन की आवश्यकता पर बल दिया। प्रो. रविप्रकाश आर्य जी ने सत्यार्थ प्रकाश का अर्थ बताते हुए इसमें वर्णित वैदिक मूल सिद्धांतों पर अपने विचार प्रकट करते हुए बताया कि हमारा दर्शन वैश्विक दर्शन है। यह नैतिक मूल्यों से युक्त ज्ञान-सम्पन्न जीवन पर बल देता है। आर्यसमाज के दस नियम वस्तुतः श्रेष्ठ मानव जीवन के नियम हैं, इनका इसी रूप में प्रचार किया जाना चाहिए। ह्यूस्टन, अमेरिका से जुड़े आचार्य ब्रहमदेव जी ने 'मनुर्भव जनया दैव्यम जनम' मंत्र से अपने वक्तव्य का आरंभ करते हुए मानवता के संदर्भ में सत्यार्थ प्रकाश के ज्ञान को सामने रखा। व्याख्यान सत्र में समापन त्रिनिडाड से जुड़े श्री विष्णु रामस्वरुप जी सहित कई वरिष्ठ और विशिष्ट लोगों ने भागीदारी की।

-(विनोद कालरा) मंत्री

प्रतिष्ठा में,

ओ३म्
असंख्य लोगों का जीवन बदलने वाला अमर ग्रन्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्यार्थ प्रकाश के विभिन्न संस्करण विविध आकार-प्रकार में उपलब्ध हैं।
प्रस्तुत संस्करण की विशेषता :
सुंदर, आकर्षक, स्पष्ट छपाई , सस्ता प्रचार एवं विशेष संस्करण

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

सह प्रकाशक
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
Ph : 011-23360150, 23365959

सत्यार्थ प्रकाश का स्वयं स्वाध्याय करें, दूसरों को प्रेरित करें और अपने इष्ट मित्रों को उपहार स्वरूप भेंट कर इसके प्रचार प्रसार में सहभागी बनें।
Available on
vedicprakashan.com and amazon
bit.ly/vedicprakashan
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोनः 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● सम्पादकः धर्मपाल आर्य ● सह सम्पादकः विनय आर्य ● व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह